राजस्थान सामान्य ज्ञान

धार्मिक संत-सम्प्रदाय

कला व संस्कृति

हस्तलिखित नोट्स

BY AADARSH KUMAWAT

Rajasthan GK

5000 प्रश्न

टेस्ट देकर पढें और तैयारी को नई दिशा दें

टॉप 1000 प्रश्न

ई - बुक सामान्य ज्ञान

डाउनलोड करलो

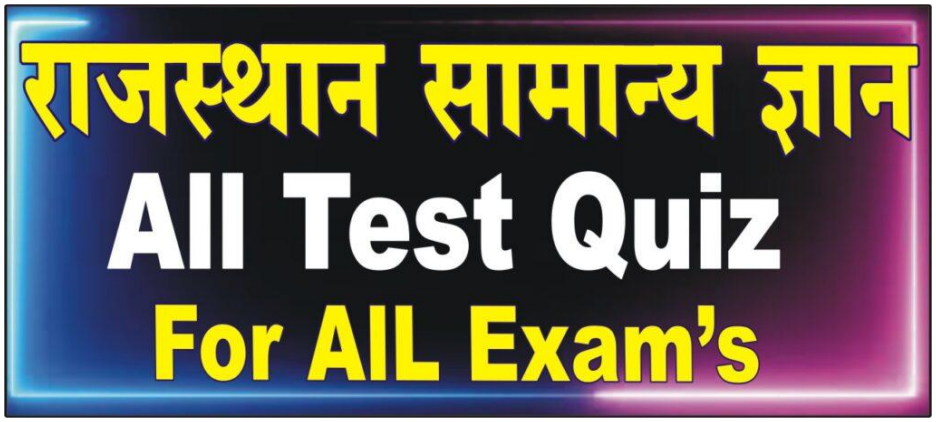

राजस्थान सामान्य ज्ञान
All Test Quiz
For AlL Exam's

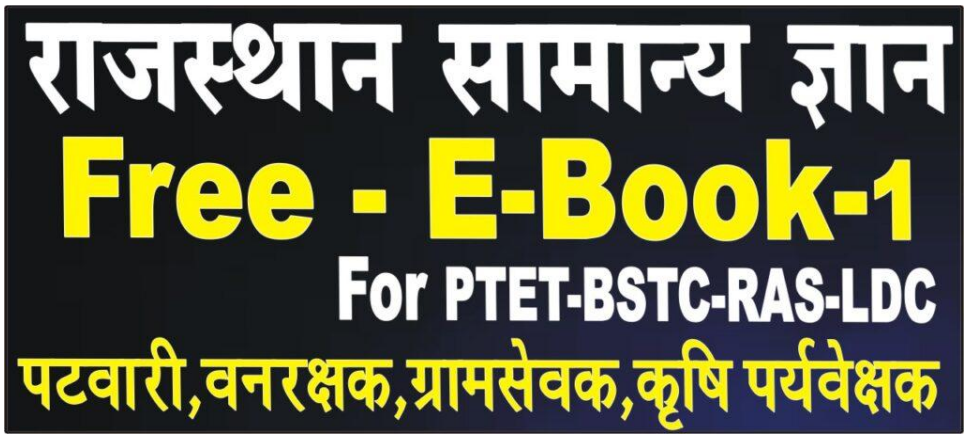

राजस्थान सामान्य ज्ञान
Free - E-Book-1
For PTET-BSTC-RAS-LDC
पटवारी,वनरक्षक,ग्रामसेवक,कृषि पर्यवेक्षक

सम्पूर्ण नोट्स PDF
विषयवार ई-बुक
सभी PDF यहां से डाउनलोड करें

सामान्य विज्ञान
500 - Questions
PDF डाउनलोड

⇒ राजस्थान में धार्मिक सन्त-सम्प्रदाय ⇐

⇒ प्राचीन समय से राजस्थान में समाज धार्मिक भावनाओं से ओतप्रोत है। यहां लगभग सभी प्रमुख धर्मों व सम्प्रदायों के मतावलम्बी पाये जाते है। यहां सगुण एवं निर्गुण की उपासना पद्धति की अविरल धारा प्रवाहित हुई।

⇒ सगुण भक्ति धारा ⇐

⇒ शैव सम्प्रदाय = भगवान शिव की उपासना करने वाले शैव कहलाए राजस्थान में कापालिक एवं पशुपात सम्प्रदायों का काफी विस्तार हुआ।

- कापालिक = मे भैरव को शिव मानकर पूजा की जाती है सम्प्रदाय के साधु तांत्रिक, श्मशानवासी, शरीर पर भस्म लगाते है
- पाशुपात सम्प्रदाय - दण्डधारी लकुलीश को प्रवर्तक माना जाता है साधु दिन में कई बार स्नान करते है। हाथ में दण्ड धारण।

⇒ नाथ सम्प्रदाय - शैव मत का नवीन रूप आर्विभाव हुआ। पंथ के प्रमुख साधु - मत्स्येन्द्र नाथ, गोपीचन्द, भतृहरि, गोरखनाथ जोधपुर नाथ सम्प्रदाय महत्वपूर्ण केन्द्र रहा। दो शाखाएं ↓

① बैराग पंथ - इसका केन्द्र पुष्कर के पास सातड़ा में।
② माननाथी पंथ - मुख्य केन्द्र महामन्दिर-जोधपुर में।

⇒ शाक्त सम्प्रदाय - शाक्त मतावलम्बी (शक्ति) दुर्गा की पूजा विभिन्न रुपों में करते है।
प्राचीन उत्खननों से प्रमाण मिले है, कि मातृशक्ति के रूप में देवी की पूजा उस समय भी प्रचलित थी

→ वैष्णव सम्प्रदाय - विष्णु को प्रधान मानकर उसकी आराधना करने वाले वैष्णव कहलाए।
→ वैष्णव सम्प्रदाय जटिल कर्मकाण्ड तथा यथावत नरबलि एवं पशुबलि की क्रियाओं के विरोधी
- ईश्वर प्राप्ति हेतु भक्ति, कीर्तन, नृत्य आदि को प्रधानता
प्रचार आंदोलन कई सम्प्रदायों का आविर्भाव भारत भूमि पर हुआ प्रमुख का वर्णन ये है ↓

→ रामानुज (रामावत) सम्प्रदाय - दसवीं सदी में दक्षिण भारत में प्रसिद्ध आचार्य यमुनाचार्य ने यत्न किया इन्हीं के शिष्य रामानुजाचार्य थे - जिनका जन्म 1017 ई. आन्ध्रप्रदेश के तिरुपति नगर में हुआ।
— ब्रह्मसूत्र पर श्रीभाष्य और भक्ति का नया दर्शन विशिष्टाद्वैत प्रारम्भ किया।
राम को परब्रह्म मानकर पूजा इस कारण रामावत कहलाए

→ रामानन्दी सम्प्रदाय - रामानुज की शिष्य परम्परा में उत्तर भारत में वैष्णव आन्दोलन की कमान गुरु रामानंद के हाथ में थी उन्हीं से प्रवर्तित मत रामानंदी कहलाए जिसमें ज्ञानमार्गी राम भक्ति की प्रधानता थी।
प्रमुख शिष्य - कबीर, धन्नाजी, पीपाजी, सेनानाई, सदनाजी, रैदास
— रामानन्द की भक्ति दास्य भाव की थी।
राजस्थान में रामानंद सम्प्रदाय की शुरुआत संत श्री कृष्णदास जी पयहारी ने की। रामानंद जी के शिष्य। पयहारी जी ने गलताजी, जयपुर में सम्प्रदाय का केन्द्र बनाया जो पहले नाथपंथियों की प्रमुख पीठ थी।
पयहारी जी के शिष्य अग्रदास जी ने रैवासा सीकर में अन्य पीठ स्थापित इनके मत को रसिक सम्प्रदाय भी कहते है। कुछ शिष्य आगे चलकर अलग मत से रामस्नेही सम्प्रदाय के नाम से विख्यात हुए।

» निम्बार्क सम्प्रदाय - आचार्य निम्बार्क द्वारा प्रवर्तित यह वैष्णव दर्शन इस सम्प्रदाय के नाम से भी। राजस्थान में निम्बार्क सम्प्रदाय की प्रमुख पीठ किशनगढ (अजमेर) के समीप सलेमाबाद में जो आचार्य परशुराम द्वारा स्थापित की गई। इस मत में भी कृष्ण व राधा की भक्ति की गई।

» वल्लभ सम्प्रदाय (पुष्टिमार्ग) - कृष्ण भक्ति के इस मत का प्रवर्तन वल्लभाचार्य द्वारा 16वीं सदी के प्रारम्भ में किया गया। वृंदावन में श्रीनाथ मन्दिर स्थापना - वल्लभाचार्य के पुत्र व उत्तराधिकारी विट्ठलदास ने अष्ट छाप कवि मंडली" का संगठन किया। औरंगजेब के आदेश द्वारा हिन्दू मन्दिरो को तोड़ने के डर से नाथ की प्रतिमा राजस्थान ले आए। फरवरी 1672 मेवाड़ महाराणा राजसिंह की अनुमति से बनास नदी के तट पर बसे सीहड़ गाँव (नाथद्वारा) में स्थापित कि गई। प्रमुख पीठ बनी। किशनगढ के शासक सावंतसिंह जी तो राजपाट छोड़कर वृन्दावन चले गए एवं कृष्ण भक्ति में लीन हो गए अपना भी भक्त नागरीदास रख लिया।

» ब्रह्म या गौड़ीय सम्प्रदाय - स्वामी मध्वाचार्य द्वारा गौड़ स्वामी द्वारा अधिक प्रचारित करने पर गौड़ कहलाया पूर्णप्रज्ञ भाष्य की रचना, द्वैतवाद नामक दर्शन। जन-जन तक फैलाने का कार्य बंगाल के गौरांग महाप्रभु चैतन्य ने किया।
आमेर के मानसिंह प्रथम ने वृंदावन में गोविन्ददेव का मंदिर - जयपुर के सवाईमाधोसिंह के समय चन्द्रमहल के पीछे राधागोविंद जी का मंदिर बनवाया।

↓ निर्गुण भक्ति धारा ↓

» राजस्थान के लोक संत एवं सम्प्रदाय «

» सन्त जसनाथजी (1482-1506 ई.)

जन्म- कार्तिक शुक्ला एकादशी वि.स. 1539 को हुआ
श्री हम्मीर जी जाट एवं रूपादे के पोष्य पुत्र।
- गोरखनाथ जी के पंथ में दीक्षित होकर गोरख मालिया (बीकानेर) में कठिन तप कर ज्ञान की प्राप्ति
- जसनाथी पंथ का प्रवर्तन कर निर्गुण-निराकार
- 24 वर्ष की अवस्था में जीवित समाधि आश्विन शुक्ला सप्तमी 1563 (वि.स.) कतरियासर
- उपदेश- सिंभूड़ा एवं कोंडा ग्रन्थ में संगृहित

» जसनाथी सम्प्रदाय «

» प्रमुख- कतरियासर (बीकानेर)
» निर्गुण भक्ति को ईश्वर-साधना का मार्ग बताया।
» अनुयायियों के लिए 36 धर्म नियम है.
- अनुयायी गले में काली ऊन का धागा पहनते है। साधु भगवा वस्त्र धारण करते है।
- धधकते अंगारो पर नृत्य करते हुए चलना-विशेषता
- सिकन्दर लोदी ने जसनाथ जी "कतरियासर" में भूमि प्रदान की

जम्भेश्वर जी / जांभोजी - (1451-1536) ई.
- जन्म- भाद्रपद कृष्णा अष्टमी 1508 (वि.स.) पीपासर नागौर में पंवार वंशीय राजपूत परिवार में
पिता - ठाकुर लोहट, माता - हंसादेवी
- बिश्नोई सम्प्रदाय का प्रवर्तन (विष्णु की उपासना)
- मृत्यु: मुकाम तालवा (लोहा. बीकानेर) में वि.स. 1593 यही इनकी समाधि स्थल है।
- प्रमुख कार्य स्थल - सम्भराथल (बीकानेर)

GK/GS टॉप 1000 प्रश्न –
Download Now

राजस्थान GK हस्त ल खत नोट्स
DOWNLOAD NOW

भारत सामान्य ज्ञान टेस्ट-शुरू करे

RAJASTHAN GK E-BOOK - DOWNLOAD

RAJASTHAN GK TEST–START NOW

= जम्भसागर, जम्भ संहिता, विश्नोई धर्म प्रकाश = ग्रन्थ।

- विश्नोई सम्प्रदाय -

- सन् 1485 में सम्प्रदाय स्थापना की गई।
- प्रमुख पीठ: मुकाम तालवा (नोखा, बीकानेर)
- निर्गुण-निराकार ब्रह्म (विष्णु) की भक्ति पर बल
- अनुयायियों को 29 नियमों के पालन का उपदेश
- वृक्षों को काटना रोक, जीवों पर दया, प्रतिदिन सवेरे शाम
- विष्णु भजन, काम, क्रोध, लोभ, मोह का त्याग
- उन्तीस नियम (20+9) विश्नोई कहलाए
- पर्यावरण संरक्षण हेतु प्राणों का बलिदान हेतु प्रसिद्ध
- जाम्भा-फलौदी, रामड़ावास-पीपाड़, जांगुल-बीकानेर पर अन्य तीर्थ स्थल - अनुयायी - विश्नोई जाति

। सन्त दादू जी । (1544-1603 ई.)

- चैत्र शुक्ला अष्टमी वि.स. 1601 को हुआ
- साधना एवं कर्मभूमि - राजस्थान ही रही।
- किवन्दती है कि ये श्री लोदीराम जी को नदी में बहते हुए संदूक में मिले थे।
- इनके गुरु कबीर के शिष्य श्री वृंदावनजी थे।
- दादू सम्प्रदाय का प्रवर्तन किया।
- मूर्तिपूजा, भेदभाव व आडम्बरों का विरोध
- प्रमुख उपदेश - दादू जी वाणी, दादू जी रा दूहा
- लेखन की कला "सधुक्कड़ी" थी।
- मृत्यु नरायणा (जयपुर) ज्येष्ठ कृष्णा अष्टमी वि. स. 1660 में हुई।
- दादूखोल या दादू पालकी - नरायणा में भैरव पहाड़ी पर स्थित गुफा जहां दादूजी ने समाधि ली।
- राजस्थान का कबीर "दादू" को कहा जाता है।
- लोक भाषा में राज्य में निर्गुण भक्ति आन्दोलन फैलाया।

- दादू पंथ -

- प्रमुख पीठ - नरायणा (जयपुर)
- निर्गुण-निराकार- निरंजन ब्रह्म को अपना आराध्य।
- अहम् का परित्याग, संयम, नियम, साधु संगति हरि स्मरण, सद्गुरु का मार्गदर्शन।
- ढोंग, जाति, वर्ग भेद का घोर विरोध।
- दादूपंथी विवाह नहीं करते, गोद से पंथ चलाते।
- दादू पंथ के सत्संग अलख दरीबा कहलाते हैं।
- दादू पंथी 4 प्रकार के हैं।
  ① खालसा ② विरक्त ③ उत्तरादे ④ खाकी
- दादू के 52 प्रमुख शिष्यों को दादू पंथ के बावन स्तम्भ कहा जाता है।
  स्थानों पर विभिन्न गद्दिया (थम्बा) स्थापित किए।
- विराट मेला - नरायणा में फाल्गुन शुक्ला पंचमी से एकादशी तक
- दादूजी के दो प्रमुख शिष्य - गरीबदास जी मिस्किनदास जी।

सन्त लालदास जी (सन् 1540-1648 ई.)

- इनका जन्म - धोलीदूब (अलवर) 1597 (वि. सं.) में
  पिता - श्री चान्दमल माता - समदा
- मुस्लिम संत गद्दन चिश्ती से दीक्षा ली
- मृत्यु नगला (गांव) भरतपुर, समाधि - शेरपुर अलवर
- लालदासी सम्प्रदाय की स्थापना
- प्रमुख स्थल - शेरपुर एवं धोलीदूब (अलवर)
- लालदासी पंथ में हिन्दू मुस्लिम एकता, रूढ़ियों व आडम्बरों का विरोध किया। पुरुषार्थ पर बल।
- ईश्वर को निर्गुण-निराकार, सर्वशक्तिमान माना है।

→ चरणदास जी (सन् 1703-1782)
→ जन्म - डेहरा (अलवर) भाद्रपद शुक्ला तृतीया 1760 संवत्
पिता - मुरलीधर, माता - कुंजो देवी के घर हुआ।
→ प्रारम्भिक नाम - रणजीत, मुनि शुकदेव से दीक्षा
- पीले वस्त्र पहनते है, चरणदासी पंथ का प्रवर्तन।
- इन्होने नादिर शाह के आक्रमण की भविष्यवाणी की थी
- चरणदासी पंथ प्रमुख पीठ - दिल्ली
- सगुण व निर्गुण भक्ति मार्ग का मिश्रण है।
- मुख्यत मेवात व दिल्ली में, पंथ मे 42 नियम है।

सन्त रामचरणजी (1720-1798) ई.
- इनका जन्म सोडागाम (जयपुर) मे 25 जनवरी 1720 ई.
बचपन नाम - रामकिशन, पिता - श्री बखतराम।
दांतड़ा (मेवाड़ मे) कृपाराम से दीक्षा ली।
- प्रारम्भ मीलवाड़, फिर कुहाड़ गांव, अन्त में शाहपुरा आए।
- मृत्यु 5 अप्रैल, 1798 को शाहपुरा (भीलवाड़ा) मे
- राजस्थान मे चार पीठ है (रामस्नेही सम्प्रदाय की)
① शाहपुरा ② रैण ③ सिंहथल ④ खेड़ापा
- प्रमुख उपदेश - गुरु की सेवा, सत्संगति, राम नाम स्मरण
- शाहपुरा शाखा की नींव रामचरण जी ने रखी।

सन्त दरियाव जी (1676-1733) ई.
→ जन्म - जैतारण (पाली) जन्माष्टमी स. 1758
- पिता - मानजी धुनिया एवं माता - गीगण।
- रामस्नेही सम्प्रदाय रैण शाखा के प्रवर्तक
- मृत्यु = रैण (नागौर) में वि.स. 1815 में
- प्रमुख पीठ - रैण (मेड़ता, नागौर)
- हिन्दू मुस्लिम समन्वय भावना को प्रोत्साहन दिया
- इन्होंने गृहस्थ जीवन में रहते हुए गुरु भक्ति एवं राम नाम स्मरण को मोक्ष प्राप्ति का साधन बताया।

→ हरिराम राम दास जी
→ जन्म - मृत्यु सिंथल (बीकानेर में) पिता - भागचंद
→ संत श्री जैमलदास जी रामस्नेही पंथ से दीक्षा
→ प्रमुख कृति "निसानी" धी, प्राणायाम, योग का उल्लेख
→ रामस्नेही शाखा - सिंथल (बीकानेर)

→ रामदास जी (1726-1798) ई. तक
→ जन्म शीकमकोर ग्राम (जोधपुर)
पिता - शार्दुल एवं माता भी भक्ति अणमी
→ सिंथल शाखा के हरिरामदास जी दीक्षा ली।
→ खेड़ापा शाखा स्थापित, खेड़ापा में मृत्यु
→ सतगुरु की सेवा और संसर्ग पर बल दिया।

सन्त हरिदास जी (1455-1528) ई.
← जन्म - डीडवाना नागौर (कापड़ोद) गांव में
← तथा इनका मूलनाम - हरिसिंह सांखला था (मृत्यु - गादा (नागौर)
← प्रारम्भ में लुटमार करते थे।
- एक सन्यासी के उपदेशों से ज्ञान प्राप्त हुआ।
- निर्गुण भक्ति का उपदेश देकर निरंजनी पंथ चलाया।
- निरंजनी सम्प्रदाय की पीठ - गादा (डीडवाना, नागौर)

→ अन्य लोक सन्त = (सन्त पीपा) 1383-1453 ई.
जन्म - गागरोन नरेश कड़वा राव खीची के घर, माता - लक्ष्मीवती
बचपन नाम - प्रताप सिंह, रामानन्द से दीक्षा
→ दर्जी समाज इन्हे अराध्य मानती है।
→ बाड़मेर के समदड़ी में पीपाजी का भव्य मन्दिर
→ कुछ समय टोडा ग्राम (टोंक) में रहे जहां पीपाजी की गुफा है
→ राजस्थान में भक्ति आन्दोलन का अलख जगाने वाले प्रथम संत
→ गागरोन में आहुवा कालीसिंध नदियों के संगम पर गुफा
वहां इनकी छतरी भी है, विशाल मेला भी भरता।

⇒ पीपाजी द्वारा रचित ग्रन्थ 'श्री पीपाजी की बाणी (हस्तलिखित

⇒ पीपाजी द्वारा रचित "चितावणी जोग" नामक उल्लेख।

⇒ चमत्कारों का उल्लेख. पीपा परचई, पीपा चरित में।

⇒ आचार्य महाप्रज्ञ ⇐

आचार्य महाप्रज्ञ का जन्म 14 जून 1920 टमकोर (झुन्झुनु)
10 वर्ष की आयु में 29 जनवरी 1931 को आचार्य कालूगणी
से जैन धर्म की दीक्षा ली एवं साधु बने।

⇒ इन्होंने सुजानगढ़ से अहिंसा यात्रा 2001 में प्रारम्भ की

⇒ इनकी विद्वता को देखकर आचार्य तुलसी ने महाप्रज्ञ की उपाधि

⇒ 1979 को आचार्य तुलसी द्वारा युवाचार्य का पद दे दिया गया

⇒ 1991 में लाडनूं में जैन विश्व भारती की स्थापना

⇒ राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम ने 15 अक्टूबर 2003
में सूरत में आचार्य महाप्रज्ञ के नेतृत्व में सभी धर्मों
के अधिकारियों का सम्मेलन आयोजित किया।

आचार्य महाप्रज्ञ ने लगभग 300 पुस्तकों की रचना की

⇒ आचार्य महाश्रमण जी ⇐

- आचार्य महाप्रज्ञ जी का 9 मई 2010 को देहावसान
इनके बाद श्वेताम्बर सम्प्रदाय के 11वें आचार्य महाश्रमण जी
(मूल नाम - दुगड़) बने। जन्म - 13 मई 1962 (सरदारशहर)
5 मई 1974 में सम्प्रदाय में दीक्षा ग्रहण की।
तथा मुदित मुनि कहलाए।

महाश्रमण जी की पुस्तकें - महात्मा महाप्रज्ञ, सुखी बनो
सम्पन्न बनो, आओ हम जीना सीखें, दुःख मुक्ति का मार्ग

- **Rajasthan Gk PDF- क्लिक करे**
- **Hindi Test Quiz – क्लिक करे**
- **HINDI NOTES - क्लिक करे**
- **RAJASTHAN GK NOTES - क्लिक करे**

- **INDIA GK TOP QUIZ– क्लिक करें**
- **RAJASTHAN GK QUIZ – क्लिक करे**
- **GENERAL SCIENCE– क्लिक करें**
- **HINDI SAMAS VIDEO– क्लिक करे**

॥ सन्त सुन्दरदास जी ॥ 1596-1707 ई.
- दादूजी के परम शिष्य - सुन्दरदास जी का जन्म दौसा में खण्डेलवाल परिवार में हुआ।
- कई ग्रन्थ लिखे - ज्ञान समुद्र, ज्ञान सवैया, सुन्दर सार
- इनका निधन संवत 1764 में सांगानेर में हुआ।
- इन्होंने दादू पंथ में नागा साधु वर्ग प्रारम्भ किया।
- पांच प्रमुख शिष्य- दयालदास, श्यामदास, दामोदरदास निर्मलदास एवं नारायण दास
- इनके पांचो थांबो को बड़े थाम्बे कहा जाता है।
- प्रधान पीठ - फतेहपुर का थाम्बा (पीठ) माना जाता है इन्हे सुन्दरदास फतेहपुरिया भी कहते है।
- भारतीय डाक विभाग ने 8 नवम्बर 1997 को 2 रुपए का डाक टिकिट जारी किया।

→ सन्त रज्जब जी - जन्म - सांगानेर 16वीं सदी में दादूजी के उपदेश सुनकर शिष्य बने.
विवाह के समय उपदेश सुनने के कारण जीवन भर दूल्हे के वेश में दादू उपदेशो का बखान किया।
रज्जब बाणी प्रमुख ग्रन्थ। स्वर्गवास - सांगानेर

→ सन्त धन्नाजी - रामानन्द के शिष्य, जन्म - 1452 संवत में धुवन ग्राम (टोंक) एक जाट परिवार में हुआ।
धन्नाजी द्वारा लिखित साहित्य - धन्नाजी की परची
धन्नाजी की आरती

→ सन्त जैमलदास जी - रामस्नेही सम्प्रदाय के प्रसिद्ध सन्त श्री माधोदासजीके शिष्य थे।
- सिद्धथल शाखा प्रवर्तक संत हरिरामदास को दीक्षा दी। इसीलिए इन्हे खेड़ापा शाखा का आदि आचार्य भी कहा जाता है।

→ भक्त कवि दुर्लभ - जन्म वि.सं. 1753 बागड़ क्षेत्र में कृष्ण भक्ति के उपदेश, बांसवाड़ा व डूंगरपुर कोकार्यक्षेत्र इन्हें 'राजस्थान का नृसिंह' भी कहते हैं।

- सन्त रैदास जी - रामानन्द के शिष्य राजस्थान के नहीं थे परन्तु इन्होंने समाज में आडम्बरो व भेदभावो का विरोध किया
- ये मीरा के समय चित्तौड़ में आए।
- इनकी छतरी चित्तौड़गढ़ के कुंभश्याम मन्दिर के कोने में बनी।

→ सन्त शिरोमणि मीरा - मीराबाई का जन्म सन् 1498 में मेड़ता के पास कुड़की ग्राम में हुआ।
- इनके पिता भी रतनसिंह राठौड़ बाजोली के जागीरदार थे
- जन्म नाम पेमल था. मेवाड़ महाराणा सांगा के पुत्र भोजराज के साथ हुआ परन्तु कुछ वर्ष बाद ही उनकी मृत्यु हो गई।
- मीरा बाई ने सगुण भक्ति का सरल मार्ग अपनाया
- अंतिम समय गुजरात के डाकोर स्थित रणछोड़ मन्दिर में चली गई, मीरां की पदावलियां प्रसिद्ध हैं।
- मीराबाई को राजस्थान की राधा भी कहते हैं

→ सन्त कबीर - कबीर पंथ राजस्थान के निम्न वर्ग के उद्धार में अधिक उपयोगी सिद्ध हुआ।
कबीर की साखियाँ विशेष उल्लेखनीय हैं।

→ सन्त मावजी - जन्म साबला ग्राम (डूंगरपुर)
सन् 1727 में इन्हें बेणेश्वर स्थान पर ज्ञान प्राप्त हुआ
बेणेश्वर धाम की स्थापना सन्त मावजी ने ही करवाई
इनका प्रमुख मन्दिर व पीठ माही तट पर साबला गांव में है।
- इनकी वाणी (चोपड़ा) कहलाती है, जिन्होंने निर्गुण व सगुण का समन्वय कर सहज भक्ति की उपासना।

सूफी सन्त

मुस्लिम संत जो ईश्वरीय भक्ति में आजीवन लीन एवं जनकल्याण को मुक्ति का मार्ग बताए ऐसे मुस्लिम सन्तो को पीर कहा जाता है।

- ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती- जन्म फारस के संजरी ग्राम में अजमेर आकर अपनी कार्यस्थली बनाया।
अजमेर में इनकी दरगाह है एवं विशाल मेला भरा जाता है।
- यहां बादशाह अकबर पुत्र प्राप्ति के लिए पैदल जियारत आए
- हिन्दू मुस्लिम एकता का सर्वोत्तम स्थल।
- पृथ्वीराज तृतीय के शासन में अजमेर आए।
- ये हजरत शेख उस्मान हारुनी के शिष्य थे।
- इनका इन्तकाल 1233 में अजमेर में ही हुआ

- नरेहड़ के पीर - (हजरत शक्कर बार)
- दरगाह - चिड़ावा (झुंझुनु), इनके शिष्य - शेख सलीम चिश्ती जिनके नाम पर अकबर ने अपने पुत्र सलीम (जहांगीर) नाम रखा
- नरहड़ के पीर की शेखावाटी में खूब विशेषता है
- पागल व्यक्ति यहां असाध्य ठीक हो जाते हैं।
- यह दरगाह भी साम्प्रदायिक सद्भाव का अनूठा स्थल।
- जन्माष्टमी के दिन उर्स का मेला
- बांगड़ के धणी के रूप में प्रसिद्ध

- पीर फखरुद्दीन - दाऊदी बोहरा सम्प्रदाय के आराध्य पीर, गलिया कोट (हुंशारपुर) में इनकी दरगाह दाउदी बोहरा समाज का प्रमुख धार्मिक स्थल

Date
Page

→ राजस्थान में अन्य निर्गुण भक्ति सम्प्रदाय

1 → अलखिया सम्प्रदाय - स्वामी लाल गिरि द्वारा 19वी सदी के प्रारम्भ में इस निर्गुण भक्ति सम्प्रदाय की पीठ 'बीकानेर में है। ग्रन्थ - अलख स्तुति प्रकाश

→ गूदड़ सम्प्रदाय - सन्तदास जी द्वारा प्रवर्तित प्रमुख पीठ - दांतड़ा (भीलवाड़ा) सन्तदासजी गूदड़ी से बड़े वस्त्र पहनते थे इसलिए गूदड़ी सम्प्रदाय कहा गया।

→ नवल सम्प्रदाय - नागौर के संत नवलदास जी से प्रवर्तित मुख्य मन्दिर - जोधपुर, उपदेश - नवलेश्वर अनुभववाणी

→ राजाराम सम्प्रदाय - संत राजाराम द्वारा प्रवर्तित। उपदेश - हरे वृक्षों को न काटना एवं पर्यावरण का संरक्षण

↓ विभिन्न धर्म, ग्रन्थ एवं पूजा स्थल ↓

→ हिन्दू	- वेद, पुराण, उपनिषद, रामायण, भगवदगीता	- मन्दिर
→ इस्लाम	कुरान शरीफ	मस्जिद
→ सिक्ख	गुरु ग्रंथ साहिब	गुरुद्वारा
→ ईसाई	बाईबिल	गिरिजाघर
→ जैन	जिनवाणी	मन्दिर
→ बौद्ध	त्रिपिटक	बौद्ध मठ
→ पारसी	जेंद अवेस्ता	अग्नि मन्दिर, अग्यारी
→ यहूदी	ओल्ड टेस्टामेंट	सिनेगोग

- **Rajasthan Gk PDF- क्लिक करे**
- **Hindi Test Quiz – क्लिक करे**
- **HINDI NOTES - क्लिक करे**
- **RAJASTHAN GK NOTES - क्लिक करे**

- **INDIA GK TOP QUIZ– क्लिक करें**
- **RAJASTHAN GK QUIZ – क्लिक करे**
- **GENERAL SCIENCE– क्लिक करें**
- **HINDI SAMAS VIDEO– क्लिक करे**

GK/GS टॉप 1000 प्रश्न –
Download Now

राजस्थान GK हस्त ल खत नोट्स
DOWNLOAD NOW

भारत सामान्य ज्ञान टेस्ट-शुरू करे

RAJASTHAN GK E-BOOK - DOWNLOAD

RAJASTHAN GK TEST–START NOW